मौर्यवंशी कुशवाहा समाज का गौरवशाली इतिहास

मौर्यवंशी समाज का इतिहास काफी गौरवशाली रहा है जिस वंश में महात्मा बुद्ध, चंद्रदुप्त मौर्य, सम्राट अशोक महान जैसे महान लोग पैदा हुए, सचमुच में वह समाज महान है। कहां जाता है कि जिसने जीता वही सिकंदर है और जिस ने सिकंदर को जीता, वह मौर्य है, वह कुशवाहा है। भारत और भारत के बाहर मौर्यवंशी समाज की जनसंख्या लगभग 20 करोड़ से भी अधिक है। मौर्यवंशी समाज एक अंतरराष्ट्रीय जाति है। भारत की एकमात्र जाति कुशवाहा है, जिसका शासन मारीशस में भी चलता है। मॉरीशस के राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम जी मौर्यवंशी कुशवाहा थे। सर शिवसागर रामगुलाम के पूर्वज एवं पिता मोहित महतो भोजपुर जिला के हरिगांव गांव के निवासी थे। शिवसागर रामगुलाम ने महात्मा गांधी की भांति 12 मार्च 1968 को ब्रिटिश आधिपत्य से मारीशस को आजाद को आजाद कराया। आजादी के बाद वे 17 वर्षो तक (1968–1985) मॉरीशस के प्रधानमंत्री एवं अंततः राष्ट्रध्यक्ष रहे। 15 दिसम्बर, 1985 को 50 वर्ष की आयु में इस मौर्यवंशी कुशवाहा सम्राट का देहांत हो गया। आज भी उनके पुत्र नवीन चंद्र रामगुलाम मॉरीशस के राजनीति में सक्रिय रहते हैं, प्रधानमंत्री भी रहे हैं। अभी विरोधी दल के नेता है।

मौर्यवंशी समाज के लोग देश विदेश में कुशवाहा, मौर्य, शाक्य, सैनी, माली, मरार, कापड़ी, मंडल, कोइरी, चौधरी, पंजियार, भाजी, महतो, मेहता, कछवाहा, काशी, गहलोत, कुशवाहा, हरदिया, भगत, पटेल, बर्मा, भुजबल, रेडी, फुले, नायर, सिंह आदि विभिन्न जातिसूचक परिणामों से दूर–दूर तक फैले हैं। यह एक लड़ाकू और जुझारू जाति है। आज तक भारतीय समाज में जितने भी सामाजिक परिवर्तन की लड़ाइयों लड़ी गई प्रायः सभी का नेतृत्व कुशवाहा समाज ने किया है। प्राचीन काल की छठी शताब्दी ईसा पूर्व में सामाजिक परिवर्त्तन की लड़ाइयां तथागत गौतम बुद्ध के नेतृत्व में लड़ी गई थी, जवकि आधुनिक काल में वही लड़ाई महात्मा फुले ने लड़ी थी। तथागत गौतम बुद्ध शाक्यवंशी थे और राष्ट्रपितामह महात्मा फुले माली वंशी थे। कहना न होगा कि शाक्य और माली मौर्यवंशी कुशवाहा समाज के अंतर्गत आते हैं। सभी जानते है कि तथागत गौतम बुद्ध का विवाह कोलिय वंश की राजकुमारी यशोधरा से हुआ था। पहले कोलिय और आज का कोयरी एक ही शब्द के अलग–अलग रूप है। तथागत गोतम बुद्ध ने जिस बौद्ध धर्म की बुनियाद भारत में डाली, वह देश–देशांतर में फैल गया। भारत का इतिहास गवाह है कि बौद्ध धर्म का जितना देश–विदेश में प्रचार–प्रसार हुआ उतना किसी भी धर्म का नहीं हुआ। श्री लंका और बर्मा से लेकर जापान और कोरिया तक बौद्ध धर्म का पताका आज भी फहरा रहा है। कुशवाहा समाज को ऐसे अंतरराष्ट्रीय धर्म पर गर्व है।

मौर्यवंशीयों का एक उपाधि मौर्य है। मौर्य वंश का इतिहास उज्जवल एवं गौरवशाली है। इसी मौर्य वंश में चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार और अशोक महान जैसे सम्राट हुए। चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में मेगास्थनीज भारत आया था। उसने लिखा है कि राजा की शान और तेज महान है। चंद्रगुप्त मौर्य का पाटलिपुत्र स्थित राजा प्रसाद अत्यंत भव्य एवं विशाल था। मेगास्थनीज लिखा है कि शाही महल के सामने सूसा और एकबटान के महल कुछ भी नहीं है। उसने यह भी लिखा है कि राजा मोतियों से सज्जित सोने की पालकी में बैठकर लोगों को दर्शन दिया करते हैं। यह है मौर्य वंश का उज्जवल इतिहास। इसी बीच के सम्राट अशोक मौर्य के बारे में एच.जी. वेल्स ने लिखा है कि अशोक का नाम इतिहास में सितारों की तरह चमकता है। वोल्गा से जपान तक आज भी उनका नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है कि जिस सम्राट की शान हमारा राजकीय प्रतीक है, जिस सम्राट का धर्म चक्र हमारे राष्ट्रीय ध्वज के केंद्र में है और जिस सम्राट के नाम से भारत का सर्वोच्च वीरता पदक ''अशोक चक्र'' दिया जाता है, ऐसे सम्राटों के सम्राट हैं चक्रवर्ती अशोक मौर्य महान।

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की सबसे मजबूत लड़ाई लड़ने वाले महात्मा फुले का जन्म कुशवाहा माली परिवार में 11 अप्रैल 1827 को महाराष्ट्र के पुर्ण में हुआ था। बचपन से ही मेधावी प्रतिभा के धनी थे। एक वर्ष की अवस्था में उनके माता जी का निधन हो गया था। उनके परिवार के लोग खेती–बाड़ी और फूलों का कारोबार करते थे। ज्योतिबा राव फुले पढ़ना चाहते थे, लेकिन कट्टरपंथियों के द्वारा पिछड़े वर्ग के लोगों को शिक्षा से वंचित कर दिया गया था। ज्योतिबा फुले मिशन स्कूल में पढ़े। 14 वर्ष की अवस्था में उनकी शादी सावित्रीबाई फुले से हुआ। एक ब्राहाण मित्र

की शादी समारोह में गए थे। जहां उनका अपमान हुआ। अपमान होने के बाद उन्होंने संकल्प लिया, मैं इस भारत की सरजमीं पर सामाजिक परिवर्तन करने का संकल्प लेता हूँ। उनके मन–मस्तिक में सामाजिक–परिवर्तन की बातें हिलकोरे लेने लगी। 1848 इसवीं में पुर्ण में प्रथम बालिका विद्यालय का स्थापना किए, जहाँ पर उनकी पत्नी भारत के प्रथम महिला अध्यापक बनी। पिछड़ों किसानों के हक–अधिकार दिलाने के लिए 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। उन्होंने कई पुस्तकों की रचना की गुलामगिरी, तृतीय रत्न, छत्रपति शिवाजी, राजा भोसला का पखड़ा, किसान का कोड़ा, अछूतों की कैफियत। वह बाल–विवाह के विरोधी एवं विध वा विवाह के पक्षधर थे। उन्होंने महिला उत्थान के लिए कई कार्य किए। लंबी बीमारी के कारण 28 नवंबर 1890 को उनका परिनिर्वाण हो गया।

सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र स्थित सतारा के नायगांव में हुआ था। देश की पहली महिला अध्यापिका बनीं। महिलाओं की शिक्षा, उनके अधि कारों की लड़ाई, पुरूषों के समान अधिकार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कन्या, शिशु हत्या रोकने, नवजात कन्या शिशु के लिए आश्रम तक खोले। उनकी शादी 9 साल की उम्र में ही ज्योतिबा राव फुले से हो गई थी। ज्योतिबा फुले ने स्त्रियों की दशा सुधारने सन् 1848 में एक बालिका स्कूल खोला, देश का प्रथम बालिका विद्यालय था। कुछ दिन स्वयं पढ़ाया, फिर अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले को इस योग्य बना दिया। सावित्री बाई फुले भारत के पहले बालिका विद्यालय की पहली अध्यापिका और प्रिंसिपल बनीं। सावित्री बाई फुले कन्याओं को पढ़ाने के लिए जाती थीं तो रास्ते में कट्टरपंथियों के द्वारा उनपर गंदगी, कीचड़, गोबर, इट, पत्थर तक फेंका करते थे। सावित्री बाई फुले एक साड़ी अपने थैले में लेकर चलती थीं और स्कूल पहुंच कर गंदी कर दी गई साड़ी बदल लेती थीं। फुले दंपति ने ब्राह्मण विधवा के बेटे यशवंतराव को गोद लिया था। उन्होंने अपने बेटे यशवंत राव फुले के साथ मिलकर अस्पताल भी खोला था। इसी अस्पताल में प्लेग महामारी के दौरान सावित्री बाई फुले प्लेग के मरीजों की सेवा करती थीं। एक प्लेग से प्रभावित बच्चे की सेवा करने के कारण उनको भी यह बीमारी हो गई जिसके कारण उनकी 10 मार्च 1897 को मौत हो गई।

मौर्यवंशीयों का गौरवशाली इतिहास भारत के स्वतंत्रता संग्राम से भी जुड़ा है। आप जानते होंगे कुंवर सिंह के प्रेरणा स्रोत अजायब महतो रहे हैं। अजायब महतो का जन्म कुशवाहा परिवार में आरा के आसपास गुड्डी सरैया गांव में हुआ था। वे कुवंर सिंह से उम्र में कोई 20 साल बड़े थे। कहा जाता है कि कुंवर सिंह ने 80 वर्ष की अवस्था में अंग्रेजों से लोहा लिया था। अब यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि अजायब महतो ने 100 वर्ष की अवस्था में अंग्रेजो के खिलाफ जंग का ऐलान किया था। ऐसे की कुशवाहा समाज के एक योद्धा सरदार

उधम सिंह सैनी थे। उधम सिंह सैने का जन्म 26 दिसम्बर 1899 को पंजाब के सुनाम गांव में हुआ था। 13 अप्रैल 1919 को हुए जालियांवाला बाग हत्याकांड से वे अत्यंत दुखी थे। उन्होंने इस हत्याकांड के मुख्य आरोपी जनरल ओ डायर को एक साल बाद 13 मार्च 1940 को इंगलैंड में लंदन असेंबली में जाकर गोली मारकर मौत के घाट उतार दिए थे। 31 जुलाई, 1940 को पेंटनविले जेल में उन्हें फांसी दे दी गई। पंजाब में सैनी कुशवाहा समाज का अविभाज्य अंग है। कुशवाहा समाज को उधम सिंह सैनी की शहादत पर गर्व है।

आजादी की लड़ाई में चौरी–चौरा विद्रोह का विशेष महत्व है। साल 1922 में हुए इस विद्रोह में आंदोलनकारियों ने 22 पुलिसकर्मी को जिंदा जला दिए थे। तत्कालीन सेशन कोर्ट में चौरी–चौरा कांड के 225 अभियुक्तों में से 172 को मृत्युदंड दिया था, पर अंततः 19 लोगों की फांसी लगी। उन्हीं अभियुक्तो में से एक थे – इंद्रजीत कोइरी,। चौरी–चौरा विद्रोह में उनकी सक्रिय भूमिका थी। पर वे फरार अभियुक्त थे। कुशवाहा समाज के ही एक अत्यंत लोकप्रिय साहित्यकार थे – कुशवाहा कांत। कुशवाहा कांत का जन्म मिर्जापुर के मुहल्ला महुअरिया में 9 दिसम्बर 1918 को हुआ था। उन्होंने ''लाल रेखा'' और ''विद्रोही सुभाष'' जैसे राष्ट्रप्रेम के उपन्यास लिखें। उनके उपन्यासों पर फिल्में भी बनी है। पर बहुत कम लोग जानते हैं कि कुशवाहा कांत स्वतंत्रा सेनानी भी थे। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में वे काफी सक्रिय रहे। मिर्जापुर में अंग्रेजो के खिलाफ जो लड़ाई लड़ी गई, उसमें कुशवाहा कांत भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक वर्ष के लिए जेल भी गए। कुशवाहा कांत ने 1943 में रॉयल एयरफोर्स में नौकरी की। पर अंग्रेजी सरकार ने उन्हें अंग्रेज विरोधी आंदोलन में शामिल होने के कारण नौकरी से हटा दी।

जिस समय भारत में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन चल रहा था, उस समय भी कुशवाहा समाज के अनेक महापुरुष सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई लड़ रहे थे। ऐसे महापुरुषों में एक थे – जे पी चौधरी। जे पी चौधरी का जन्म मिर्जापुर जिले के अदलहाट नामक गांव में 1881 में हुआ था। जेपी चौधरी कुशवाहा समाज के सच्चे हितैषी थे। वह जीवन पर्यंत विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करते रहे। अपने दौरा के क्रम में वे कुशवाहा समाज को जगाते रहे। वे विद्धान भी थे। उन्होंने ''कुशवाहा वंश परिचय'' नामक पुस्तक लिखी है। इसके अलावा उनकी अनेक पुस्तकें जो सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना से लैस है। ऐसे ही एक सामाजिक चेतना फैलाने वाले कुशवाहा समाज की विभूति थे – यदुनंदन प्रसाद मेहता। यदुनंदन प्रसाद मेहता ''त्रिवेणी संघ'' के संस्थापकों में से एक थे। उनका जन्म शाहाबाद जिले के जितौरा गांव के लाखनटोला में 18 फरवरी, 1911 को हुआ था। 1940 में उन्होंने ''त्रिवेणी संघ का बिगुल'' नामक पुस्तक की रचना की थी। उन्होंने 1948 में एक पत्रिका ''शोषित पुकार'' का संपादन किया था। उन्होंने कुशवाहा समाज पर एक किताब ''कुशवाहा प्रकाश'' भी लिखा था। पिछड़ों के बीच बेगारी, ऊंच-नीच और शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ यदुनंदन प्रसाद मेहता ने जबरदस्त आंदोलन किया था।

आजादी के बाद भी कुशवाहा समाज सक्रिय रहा। बिहार लेनिन जगदेव प्रसाद से लेकर मास्टर जगदीश प्रसाद, ज्योति प्रकार, डॉक्टर निर्मल कुमार महतो और कामरेड चंद्रशेखर जैसे अनेक महापुरुषों ने समाज हित में अपना बलिदान दिया। कुशवाहा समाज में शहीदी की लंबी परंपरा रही है। 2 फरवरी 1922 को अरवल जिला के कुर्था प्रखंड के कुरहारी गांव में जन्मे बिहार लेनिन जगदेव प्रसाद ने आजीवन शोषितों के पक्ष में लड़ाई लड़ी। उनका नारा था– दस का शासन नब्बे पर नहीं चलेगा, नहीं चलेगा। शोषकों के खिलाफ जंग लड़ने वाले ऐसे महापुरुष ने 5 सितंबर 1974 को अपनी जान की कुर्बानी सरकार की गोली खा कर दी। गरीबों की लिए रोटी और इज्जत की लड़ाई लड़ने वाले मास्टर जगदीश प्रसाद महतो को कौन नहीं जानता है? मास्टर जगदीश प्रसाद भोजपुर जिला के एकवारी गांव के थे। महेश्वता देवी ने उनके जीवन पर एक उपन्यास लिखा है– मास्टर साहब। वे आरा जैन स्कूल में शिक्षक थे। पर सामंतों के अत्याचार से अजिज आकर वह भूमिगत हो गए थे। उनके जीवन पर एक उपन्यास मधुकर सिंह ने भी लिखा है। मधुकर सिंह भी कुशवाहा थे तथा वे भी मास्टर जगदीश प्रसाद के साथ जैन स्कूल आरा में पढ़ते थे। मधुकर सिंह का जन्म आरा के पास धरहरा नामक गांव में 1934 ई में हुआ था। कुशवाहा समाज के बहुत बड़े साहित्यकार थे। गरीबों तथा पिछड़े के पक्ष में वे सदैव लिखते रहे। उनके दर्जनों उपन्यास और सैकड़ों कहानियां हैं। उन्होंने ''अर्जन जिंदा'' है नाम से मास्टर जगदीश प्रसाद पर इतिहास लिखा है। अत्याचारी सामंतों के खिलाफ लड़ते-लड़ते आखिरकार मास्टर साहब 10 दिसंबर, 1972 को अनजाने में ही अपने लोगों के हाथ शहीद हो गए।

ज्योति प्रकाश का जन्म 11 दिसंबर, 1939 को बक्सर जिले की इटाढ़ी प्रखंड के इंदौर गाँव में हुआ था। उन्होंने मजदूरों और किसानों के लिए भरपूर लड़ाई लड़ीं पर सामंती शक्तियों का उनका यह कार्य मंजूर नहीं था। 17 मार्च 1983 को बक्सर से आरा जाने के क्रम में ज्योति प्रकाश को सरेआम गोली मारकर हत्या कर दी गई। सचमुच ज्योति प्रकाश कुशवाहा समाज के ज्योतिपुंज थे। कुशवाहा समाज के वीर पुरुष डॉ० निर्मल कुमार महतो 27 वर्ष के जीवनकाल में ही मार डाले गए। डॉ० निर्मल कुमार, संदेश प्रखंड के बरोरा गांव के निवासी थे। वह दरभंगा मेडिकल कॉलेज में एम.बी. बी.एस. के छात्र थे। वो सामंतों के अत्याचार से मेडिकल की पढ़ाई छोड़कर भूमिगत हो गए थे। 29 नवंबर 1975 को डॉ० निर्मल कुमार शहीद हुए। 32 वर्ष की आयु में कामरेड चंद्रशेखर भी शहीद हुए। कामरेड चंद्रशेखर का जन्म सिवान जिला के बिंदुसार गांव में 20 सितंबर, 1964 को हुआ था। उनके अंदर समाज को बदलने की बेचैनी थी। पर समतामूलक समाज स्थापित करने में उन्हें भी जीवन से हाथ धोना पड़ा। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से भिखारी ठाकुर के नाटक पर एम०फिल० किया था। दिल्ली जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र संघ के अध्यक्ष भी थे। कहना न होगा कि कुशवाहा समाज के अनेक महापुरुषों ने अपना बलिदान दिया। बल्कि सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई में सबसे ज्यादा अपनी आहुति कुशवाहा समाज के विभूतियों ने दिया।

इ० शिवधारी सिंह